उपसंहार

उ प सं हा र

आधुनिक हिन्दी साहित्य की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने की दृष्टि से उपेन्द्रनाथ अश्क का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अश्क के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, काव्य, संस्मरण, रेखाचित्र आदि के रूप में बहुसंख्यक कृतियां उपलब्ध होती है। अश्क के व्यक्तित्व के वैचारिक पक्ष के दर्शन करानेवाली भी अनेक स्फुट रचनाएं उपलब्ध होती हैं। परिवार तथा वातावरण की कुण्ठाओ तथा विसंगतियों ने अश्क को कहानीकार बनाया है और वे व्यक्ति के दर्द का स्त्रोत खोजते-खोजते समाज के दर्द का आभास पा लेते है। वे सामाजिक यथार्थ के कहानीकार न होकर वैयक्तिक यथार्थ के उद्‌घोषक है। इस युग में जहां मनोविश्लेषण एवं एक विचित्र-सी अनास्था ने सारी कहानी विधा को आक्रान्त कर दिया था, वहां कदाचित अश्क ही एक ऐसे अकेले कहानीकार थे, जिन्होंने व्यक्ति तथा समाज को समानान्तर बिंदुओं के बीच अर्थ की गरिमा प्रदान की और उस के बहुविधिय पक्षों को यथार्थ धरातल पर रुपायित किया।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों के चार वर्ग बनाये जा सकते हैं। एक वर्ग उनकी हास्य-व्यंग्य कहानियों का है, जिसमें समाज की विकृतियों पर तीखे, पर मार्मिक व्यंग्य कसे गये हैं। दूसरा वर्ग चरित्र प्रधान कहानियों का है। तीसरा वर्ग दुरुह एवं सांकेतिक कहानियों का है। इस प्रकार की कहानियां अश्क ने बहुत कम लिखीं हैं, जो मुख्यतया प्रयोग के तौर पर लिखी गयी हैं। चौथा वर्ग समस्यामूलक कहानियों का हैं, जिसमें कोई न कोई समस्या उठाई गयी है और उनका समाधान व्यष्टिमूलक भावधारा के अनुसार प्रस्तुत किया गया है।

अश्क का प्रारंभिक जीवन बडा ही कष्टमय रहा है और उन्हें जीवन में

अनेक भयावह दु:ख झेलने पडे है। इन कारणों से उनके कलाकार मन को वह पैनी अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई, जो यथार्थ के रंग को गाढा एवं प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध हुयी है। अश्क ने नारी जीवन की अनुभूतियों को अपने संवेदनशील मन से ग्रहण करने और कला के माध्यम से अभिव्यक्त करने में किसी प्रकार के पक्षपात अथवा विशेष दृष्टिकोण का आश्रय नहीं ग्रहण किया। उन्हों ने जो कुछ भी देखा-गलन, सडन और दुर्गंध इन सभी को यथातथ्य रुप में बडे सीधे-सादे ढंग से प्रस्तुत कर दिया।

इस काल में जीवन और समाज के साथ नारी की समस्याओं एवं विविध रुपों का जितना यथार्थ चित्रण पूर्ण कलागत ईमानदारी के साथ अश्क ने किया है, इतना अन्य किसी भी कहानीकार ने नहीं। इस दृष्टि से देखा जाय तो अश्क अन्यतम है, सजग जागरुक और प्रगतिशील दृष्टिकोण का चित्रांकन करने में अकेले हैं। अश्क ने जीवन और समाज का सत्य चित्रित कर नारी को यथार्थ दिशा प्रदान की है। उसकी गुत्थियों, उलझनों को पूर्ण व्यापकता एवं विराटता की पृष्ठभूमि पर परिचित कराते हुये उसे निरन्तर संघर्षरत रहने की प्रेरणा दी है। उन्होंने नारी व्यक्तित्व के विविध रुपों को कही भी छिपाया नहीं है और न जान-बूझकर अस्वस्थ बनाया है।

अश्क नारी की स्वतंत्रता तो चाहते है, पर इसके लिए वे उसकी रुढियों एवं जर्जरित मान्यताओं को समाप्त कर ऐसी नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण चाहते है, जिसमें प्रत्येक नारी को प्रगति का समान अवसर मिले। उसे अपने व्यक्तित्व को खंडित न करना पडे, अपने विश्वास को ताडना न पडे - पर ये सब वे समाज के भीतर ही चाहते हैं, समाज के बाहर नहीं।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में विषय प्रवेश के अंतर्गत सर्व प्रथम आलोच्य साहित्यकार का जीवन परिचय दिया गया है। इस संदर्भ में

अश्क के व्यक्तित्व, जन्म तथा परिवार, शिक्षा, विवाह, जीवन संघर्ष, आकाशवाणी एवं चलचित्र जगत में, यक्ष्मारोग, माता-पिता, व्यक्तित्व, पुरस्कार, अभिनंदन एवं विदेशयात्रा आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत उनका सम्यक परिचय दिया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कृतियों के रुप में सितारों के खेल, गिरती दीवरें, गर्म राख, बडी-बडी आँखे, पत्थर-अल-पत्थर, शहर में घूमाता आईना, एक रात का नरक, एक नन्ही किन्दील, तथा बांधों न नांव इक ठांव प्रभृति औपन्यासिक कृतियों की चर्चा की है। अश्क के काव्य साहित्य के अंतर्गत प्रात-प्रदीप, उर्म्मियां, दीप जलेगा, सडकों पे ढले साये, खोया हुआ प्रभामण्डल, अदृश्य नदी आदि कविता संग्रहों के साथ ही बरगद की बेटी तथा चाँदनी रात और अजगर नामक खण्डकाव्यों का भी संक्षिप्त परिचय दिया है। अश्क की नाट्यकृतियों में जय पराजय, स्वर्ग की झलक, छठा बेटा, भंवर, कैद और उडान, अलग-अलग रास्ते, पैंतरे तथा अंजो दीदी का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। अश्क के एकांकी साहित्य के अंतर्गत देवताओं की छाया में, साहब को जुकाम है, पक्का गाना, अंधी गली, नये रंग, चरवाहे, तथा पर्दा उठाओ ! पर्दा गिराओ ! आदि एकांकी संग्रहों का परिचय दिया है। इस के अतिरिक्त अश्क के कहानी संग्रहो में बैंगन का पौधा, जुदाई की शाम का गीत, छींटे, कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल, आकाशचारी, निशानियां, काले साहब, दो धारा, वासना के स्वर, रोबदाब आदि कहानी संग्रहों का उल्लेख किया है। उपरोक्त कृतियों के साथ ही उनके संपादित, अनुवादित तथा आलोचनात्मक कृतियों का परिचय दिया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में उपेन्द्रनाथ अश्क के कहानी साहित्य की सम्यक विवेचना की गयी है। अश्क के कहानी साहित्य में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, यथार्थपरक, प्रकृतिवादी, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक एवं

राष्ट्रीय कहानियां उपलब्ध होती हैं। अश्क की सामाजिक कहानियों में मुख्यत: समस्याप्रधान, भावप्रधान, आदर्शप्रधान एवं नीतिप्रधान कहानियां हैं। अश्क के विभिन्न कहानी संग्रहों में प्रकाशित प्रत्येक कहानी की यहां विवेचना की गयी है

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का तीसरा अध्याय 'उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कहानियों में चित्रित नारी जीवन है, जो लघु शोध-प्रबन्ध का विषय है। इसके अंतर्गत नारी जीवन के विविध रुपों को और उनकी समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है।

प्राचीन काल से साहित्य का नारी से अन्योन्य सम्बन्ध रहा है। साहित्य की विभिन्न विधाओं द्वारा उसके विविध रुपों का अभिव्यक्त करने की भरसक चेष्टा की गयी है। लेकिन अन्य विधाओं की अपेक्षा कथा साहित्य का नारी जीवन से अधिक नजदीक का सम्बन्ध रहा है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में नारी जीवन को प्रमुखता दी गयी, जिसके परिणाम स्वरुप उसके जीवन की विविध झांकिया प्रस्तुत की गयी। उसमें नारी जीवन की गरिमा के साथ-साथ उसकी दयनीयता, उपेक्षा, हीनता, दासता, विवशता, लाचारी, दु:ख, यौन समस्या तथा पीडाओं से भरा नारी जीवन अभिव्यक्त है। प्रेम, विवाह, वैधव्य, वेश्या, बांझपन, अनैतिकता, बलात्कार, नारी शोषण आदि नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण किया गया है। उसके साथ ही नारी जीवन के गरिमामय पक्ष का भी उद्‌घाटन किया है, जिसमें त्याग, निष्ठा, कर्मठता, सहनशीलता, सेवापरायणता आदि सहज भावनाओं का अंकन किया है, तो दूसरी ओर उसकी ईर्ष्या, विद्रोह, मत्सर का भी वर्णन है।

भारतीय नारी एक साथ अनेक रुपों में हमारे सामने आती है। उसके विविध रुपों का वर्णन उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है ।

नारी और प्रेम

जीवन की सबसे पवित्र भावना प्रेम ही है और नारी के लिए प्रेम तो सर्वस्व होता है। वह मेरी मंगेतर थी, ठहराव, निशानियां, कुन्ती, जुदाई की शाम का गीत आदि कहानियों में प्रेम के विविध रुपों का वर्णन है।

नारी और विवाह

भारतीय संस्कृति में विवाह नारी को एक महत्ता प्रदान करता है, उसको गरिमा और मान-सम्मान प्रदान करता है। लेकिन बदलती सामाजिक परिस्थिति के कारण विवाह सम्बन्धो में भी उतार-चढाव आ गये। उसकी पवित्रता तथा आवश्यकता के बारे में भी संदेह निर्माण होने लगा। ऐसी स्थिति में भारतीय नारी की स्थिति और भी दयनीय हो गयी। बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि प्रश्नों की ओर अश्क जी ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। इसके साथ ही विवाह के कारण पति-पत्नी में निर्माण होनेवाले शारीरिक तथा मानसिक संघर्षों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। 'अंकुर', 'चट्टान', ' पहेली' आदि कहानियों में अश्क जी ने इन प्रश्नों को उजागर किया है।

नारी और मातृत्व

मातृत्व नारी के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण सोपान माना गया है। खासकर भारतीय स्त्री के लिए विवाह और पत्नी के लिए माता होना परम आवश्यक माना गया है। अश्क ने अपनी कहानियों में नारी की इस मातृत्व भावना के विविध पहलुओं को चित्रित किया है। 'नन्हा', 'मां', 'मोह मुक्त हो', ' गोखरु', 'ठहराव', 'पलंग' आदि कहानियों में मातृत्व के विविध रुपों को उन्होंने चित्रित किया है।

पुरुष द्वारा नारी का शोषण

प्राचीन काल से भारत में नारी का शोषण होता आया है। पुरुष ने उसे अबला समझकर हमेशा उसे अपनी दासी बनाकर रखा है। परिणामत: प्रत्येक काल में

पुरुष द्वारा नारी का शोषण होता रहा। अश्क ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी की ओर देखने का पुरुष का दृष्टिकोण उसके द्वारा किये जानेवाले अत्याचार, नारी की शारीरिक तथा आर्थिक तथा सामाजिक पराधीनता आदि को बडे ही सही ढंग से स्पष्ट किया है। 'सतीत्व का आदर्श', 'भिश्ती की बीबी', 'पत्नीव्रत', 'मर्द का एतबार' आदि कहानियों मे इनकी विस्तार के साथ चर्चा की गयी है।

नारी का वेश्यापन

नारी जीवन की सबसे घृणित अवस्था वह है, जो उसे वेश्या बनने के लिए मजबूर करती है। कोई भी नारी अपनी इच्छा से वेश्या नही बनती, उसका परिवेश उसे इसके लिए मजबूर करता है। 'फर्लो', 'उबाल', 'वह मेरी मंगेतर थी' आदि कहानियों में अश्क ने नारी जीवन के इस घिनौने पक्ष का उद्‌घाटन किया है।

नारी और यौन समस्या

कथा साहित्य में नारी को देवी के रुप में प्रतिष्ठित किया गया पर प्रत्यक्ष व्यवहार में उसकी स्थिति गुलाम जैसी ही थी। वह शारीरिक और मानसिक दोनो ही दृष्टि से पुरुष की वासना का शिकार बनती रही। एक स्वतंत्र व्यक्ति के रुप में उसके व्यक्तित्वका विकास नहीं हुआ। हमेशा वह दबी रही। परिणामत: उसमें कुण्ठाओं का जन्म हुआ। कुछ नारियो ने इस स्थिति का विरोध किया, पर आमतौर पर नारी ने अपना भाग्य समझकर इसे अपना लिया। फ्राइड ने नारी की अनेक समस्याओं के मूल में उसकी यौन समस्या को प्रधानता दी। अत: अश्क ने भी अपनी कहानियों के द्वारा नारी की यौन समस्याओं को चित्रित किया। 'बेबसी' कहानी की आया कुरुप है, इसी कारण उसकी शारीरिक इच्छाओं की तृप्ति नहीं हो पाती, तब वह अपने मालिक की ओर आकर्षित हो, कामविव्हल हो जाती है।

विद्रोही नारी

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों में सिर्फ परंपरागत भारतीय नारी का ही चित्रण नही है, बल्कि इसके साथ-साथ विद्रोही नारी का भी वर्णन है। यह विद्रोह सामाजिक अन्याय तथा दमन के कारण होता है। अश्क ने अपनी कुछ कहानियों में नारी के व्यक्तिगत विद्रोह का खुलकर चित्रण किया है। 'भिश्ती की बीबी', 'झाग और मुस्कान', 'पाप का आरंभ', 'नज्जिया', 'राजकुमार' आदि कहानियों में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विभिन्न रुप दिखाई देते है। नारी का व्यक्तित्व, नारी का अहं तथा उसका विद्रोहात्मक रुप चित्रित हुआ है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप दृष्टिगोचर होते है.। अश्क ने नारी जीवन के विविध रुपों के साथ साथ उसके जीवन की सम्बन्धित समस्याओं की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है। पुरुष प्रधान समाज में नारी का कोई अपना स्वतंत्र अस्तित्व नही होता। वह हमेशा किसी की कन्या, किसी की पत्नी, और किसी की माता के ही रुप में पहचानी जाती है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की दृष्टि चिन्तक होने के साथ ही सामाजिक कुप्रवृत्तियों की आलोचना, समाज सुधार और मानसिक संघर्षों के अन्तर्द्वन्द्वों को उभारने की ओर विशेष रुप से रही है। नारी जीवन तो बहुविध अंत:बाह्य आंदोलनों का केंद्र होता है। अश्क ने अपनी कहानियों में इन आंदोलनों का यथार्थ चित्रण किया है। नारी के वास्तविक जीवन की अभिव्यक्ति तथा सामाजिक मान्यताओं की विवेचना की है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि उपेन्द्रनाथ अश्क ने नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को बडी सूक्ष्मता और सक्षमता के साथ छूने का प्रयास किया है और इस प्रयास में वे पूर्णत: सफल रहें है।